43

रूपांतर होना

(17:1-13)

अध्याय 17 की घटनाओं का वह भाग (अध्याय 14-17) जिसे हम ने ''यीशु की सेवकाई की और प्रतिक्रिया'' नाम दिया है, समाप्त होता है। आत्मा के द्वारा मत्ती हमारे सामने इस बात को ठहराना जारी रखता है कि यीशु के आस-पास के लोग उसे किस प्रकार देखते हैं और उसके व्यक्तित्व और उसके कामों को कैसे ग्रहण करते हैं। फिर मत्ती सिखाने के चौथे विस्तृत भाग को देकर यीशु की सिखाने की सेवकाई को प्रकाशमान करने के लिए मुड़ आया (अध्याय 18)।

इस अध्याय का आरम्भ रूपांतर होने के विवरण के साथ होता है (17:1-13) जिसमें मसीह की महिमा प्रगट की गई थी। जो कुछ हुआ था, उस पर गुमराह जोश के साथ प्रतिक्रिया देते हुए पतरस ने मूसा और एलिय्याह *के साथ-साथ* यीशु को आदर देने की चाह परमेश्वर ने स्वर्ग में से अपने पुत्र की श्रेष्ठता की घोषणा करते हुए इस स्थिति को छायावृत कर दिया। इन तीनों प्रेरितों को केवल यीशु की सुनने की आवश्यकता की परमेश्वर की आज्ञा मसीही युग के लिए दी गई आज्ञा बनी रहती है।

पहाड़ पर यीशु की महिमा (17:1-8)

[1]छह दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उस के भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। [2]वहां उनके सामने उस का रूपान्तर हुआ और उस का मुंह सूर्य के समान चमका और उस का वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। [3]और मूसा और एलिय्याह उस के साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। [4]इस पर पतरस ने यीशु से कहा, ''हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है, यदि तेरी इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिए एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।'' [5]वह बोल ही रहा था, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो।'' [6]चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए। [7]यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, ''उठो, डरो मत।'' [8]तब उन्होंने अपनी आंखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।

पहाड़ों की चोटियों में परमेश्वर के कई प्रकाशनों और छुटकारों के लिए पृष्ठभूमि दी गई है। पुराने नियम में, जलप्रलय के बाद नूह जहाज लेकर अरारात नामक पहाड़ पर उतरा था (उत्पत्ति 8:4)। मूसा को व्यवस्था सीनै पहाड़ पर मिली (निर्गमन 24:1, 16; 34:1-5) और उस ने प्रतिज्ञा किए हुए देश को नबो पहाड़ से देखा था (व्यवस्थाविवरण 34:1-4)। एलिय्याह ने कर्मेल पर्वत पर बाल के नबियों का नाटकीय ढंग से सामना किया था (1 राजाओं 18:19-40)।

नये नियम में पहाड़ों पर होने वाले अधिकतर अनुभवों में स्वयं यीशु था। उस का सबसे बड़ा लिखित उपदेश पहाड़ पर से या कफरनहूम के निकट पहाड़ी से दिया गया था। गलील में एक अनाम पहाड़ की चोटी पर यीशु ने अपने प्रेरितों को ग्रेट कमीशन दिया था (28:7, 10, 16-20)। जैतून पहाड़ पर से उसे स्वर्ग में पिता के पास ऊपर उठा लिया गया था (प्रेरितों 1:4-12)। हमारे वर्तमान वचन पाठ में मत्ती 17:1-8 जो कि यीशु के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है एक ऊंचे पहाड़ पर घटा।

रूपांतर, जिसे उसके सबसे निकट तीन प्रेरितों पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ साझा किया गया था, एक बहुत ही महत्वपूर्ण समय पर हुआ। राज्य के आने की प्रतिज्ञा के बाद (16:28), रूपांतर होने से इन गवाहों को राजा की महिमा का एक पूर्वस्वाद दिया गया। इसके अलावा यीशु के पुत्र होने की पिता की घोषणा से पतरस के अंगीकार की सच्चाई की पुष्टि हो गई (16:16)। इससे भी बढ़कर, उसके सिर पर मंडराती मृत्यु (16:21) और उनके ऊपर आने वाले दुख को ध्यान में रखते हुए (16:24-26), यीशु की महिमा को देखना बेशक उनके लिए अतिरिक्त आश्वासन था, उस का जिसने परमेश्वर के चुने हुए मसीहा के रूप में क्रूस पर चढ़ाए जाने का दुख सहना था, वास्तविक स्वभाव और ईश्वरीय महिमा क्रूस पर होने के द्वारा दिखाया गया है।[1]

आयत 1. मत्ती और मरकुस दोनों ने इसे उस पहाड़ पर जहां उस का रूपांतरण हुआ था **यीशु छह दिन के बाद** के रूप में लिपिबद्ध किया है (मरकुस 9:2)। परन्तु लूका ने इसे पहले की घटनाओं के ''कोई आठ दिन'' बाद होना बताया है (लूका 9:28)। इन विवरणों में किसी विरोधाभास का प्रमाण नहीं है। पहले तो लूका ने ''कोई'' (*hōsei*) या ''लगभग'' (NIV) शब्द का इस्तेमाल किया, जो इस बात का संकेत देता है कि वह संक्षिप्त होना नहीं चाहता था। दूसरा लूका समय की गणना के लिए यहूदी ढंग का इस्तेमाल कर रहा हो सकता है; उस ढंग से दिन के एक भाग को पूरा दिन माना जाता था। सहदर्शी विवरणों के अन्य लेखकों ने प्रभु की निकट मृत्यु के सम्बन्ध में प्रेरितों को उसके प्रकाशन के दिन को या जिस दिन रूपांतर हुआ था उसे नहीं गिना, बल्कि बीच के केवल छह दिनों को गिना।

पतरस, **याकूब** और **यूहन्ना** प्रभु के सबसे नज़दीकी साथियों में से थे और उन्हें उसके ''भीतरी दायरे'' के लोगों के रूप में वर्णित किया जाता है। पहले याइर की बेटी को उसके मुर्दों में से जिलाने के समय केवल यही तीन प्रेरित वहां थे (लूका 8:41, 42, 51-56)। बाद में गतसमनी बाग में उसके बड़े क्लेश वाली रात उन्होंने उसके पास होना था (26:36-45)। उनके साथ अपने विशेष लगाव के कारण उस ने उन्हें इस अवसर पर अपने महिमा पाने के गवाह होने के लिए चुना।

इस भव्य दृश्य के गवाह बनने की केवल इन तीन प्रेरितों को ही अनुमति क्यों दी गई? क्या इस कारण कि केवल वे ही प्रभु के धर्मसंकट को समझ सकते थे और उसके साथ सहानुभूति रख सकते थे? बाद में कही गई बातों से यह पता चलता है कि यह सही नहीं था (लूका 9:33)। क्या इस कारण क्योंकि वे उसके आरम्भिक चेलों में से थे? इसके लिए हमें पूछना पड़ेगा कि अंद्रियास, फिलिप्पुस और नतनएल को क्यों नहीं (यूहन्ना 1:35-51)?

दोनों से बढ़कर एक और विश्वसनीय सुझाव है कि ''दर्शकों की गिनती कम रखकर यीशु

इस घटना को दूसरों को बताने के लिए सही समय आने तक आसानी से रोक सकता था'' (देखें 17:9)। पतरस ने बाद में यह कहते हुए कि ''हमने आप ही अपने प्रताप को देखा था'' इस घटना के विषय में लिखा (2 पतरस 1:16)। यूहन्ना के मन में भी रूपांतर होने की बात हो सकती है जब यूहन्ना 1:14 में उस ने कहा कि ''हमने उस की महिमा देखी।'' यह तथ्य कि यीशु ने तीन प्रेरितों को अपने साथ लिया ''दो या तीन गवाहों'' की गवाही से किसी मामले की पुष्टि होने की बाइबली शर्त से भी मेल खाता है (व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; मत्ती 18:16; 2 कुरिन्थियों 13:1; 1 तीमुथियुस 5:19; इब्रानियों 10:28)।

मत्ती के अनुसार वह **पहाड़** जिस पर यीशु तीन प्रेरितों को **ले गया,** एक **ऊंचा** पहाड़ था। परन्तु सुसमाचार के एक भी लेखक ने उस की सही-सही जगह नहीं बताई। जब पतरस ने बाद में इस घटना की बात की, तो उस ने इसे केवल ''पवित्र पहाड़'' कहा (2 पतरस 1:18)। यकीन के साथ उस स्थान की पहचान करना असम्भव है।

परम्परा के अनुसार यह स्थान ताबोर पहाड़ था, जो नासरत से छह मील दक्षिणी पश्चिम में था। यह पहाड़ प्रभु की अन्तिम ज्ञात भौगोलिक स्थिति कैसरिया फिलिप्पी से लगभग तीन दिन के सफर का होगा (16:13)। परन्तु ताबोर पहाड़ केवल 1,800 फुट लगभग ही ऊंचा है जो ''ऊंचे पहाड़'' की परिभाषा से शायद ही मेल खाता हो। इसके अलावा स्पष्टतया मसीह के समय में ताबोर पहाड़ की चोटी पर एक रोमी चौकी थी,[2] इस बात की सम्भावना को कम कर देता है कि वह वहां गया होगा।

कइयों का मानना है कि हर्मोन पहाड़, जो कैसरिया फिलिप्पी के उत्तर पूर्व में केवल चौदह मील था और 9,000 फुट से ऊंची बर्फ से ढकी चोटियां थीं, ही वह स्थान होगा, जहां यह घटना घटी। परन्तु कुछ लोग इस पर संदेह करते हैं कि यहूदी शास्त्री (मरकुस 9:14) इतनी दूर उत्तर में अन्यजातियों की आबादी वाले लोगों में मिले हों।

जगह के लिए एक और सुझाव मेरोन पहाड़ का दिया जाता है, जो गलील की झील के उत्तर-पश्चिम में आठ मील दूर था। यह लगभग 4,000 फुट ऊंचा था जिसकी चोटी फलस्तीन में सबसे ऊंची थी। यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी (16:13) से कफरनहूम (17:24) को जाते हुए रास्ते में आसानी से मेरोन पहाड़ पर गए हो सकते हैं।

आयत 2. यीशु प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया (लूका 9:28)। प्रार्थना करते हुए अपने चेलों के सामने **उस का रूपांतर हुआ**। ''रूपांतर हुआ''[3] के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*metamorphoō*) अंग्रेजी भाषा के शब्द ''metamorphosis'' (कायापलट) का आधार है। रोमियों 12:2 और 2 कुरिन्थियों 3:18 में इसका अनुवाद ''बदलना'' हुआ है। *मैटामोरफू* (*Metamorphoō*) उस बाहरी बदलाव का संकेत देता है, जो भीतर से होता है। यीशु की महिमा मूसा की तरह प्रतिबिम्बित नहीं हुई थी (निर्गमन 34:29-35), बल्कि यह उसके अपने अंदर से निकली थी (देखें कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3)। माइकल जे. विलकिन्स ने इसे एक शारीरिक कायापलट के रूप में वर्णित किया है जो ''यीशु के देहधारी होने से पहले की महिमा का स्मरण (यूहन्ना 1:14; 17:5; फिलिप्पियों 2:6-7) और उसके आने वाले ऊंचा किए जाने का परिदृश्य है (2 पतरस 1:16-18; प्रकाशितवाक्य 1:16),'' रूपांतर जिससे उसके ''ईश्वरीय स्वभाव और परमेश्वर के रूप में महिमा'' को प्रगट किया गया।[4]

उस का मुंह सूर्य के समान चमका और उस का वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। लूका के अनुसार ''उसके चेहरे का रूप बदल गया: और उसके वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगे'' (लूका 9:29)। मरकुस के विवरण में यह जोड़ा गया है कि ''उस का वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहां तक अति उज्जवल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्जवल नहीं कर सकता'' (मरकुस 9:3)। ये कथन प्रभु के रूप में आने वाले उस नाटकीय बदलाव को प्रकाशमान करते और उसके स्वर्गीय स्रोत को प्रगट करते हैं (देखें दानिय्येल 7:9; मत्ती 28:3; प्रेरितों 1:10; प्रकाशितवाक्य 1:16; 4:4; 7:13; 10:1)।

आयत 3. जैसा कि लूका ने दिखाया है, तीनों ही प्रेरित यह सब होने के दौरान सो रहे थे। यह दुख भरी विडम्बना है कि ये भरोसे योग्य अनुयायी मसीह के जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पलों अर्थात उसके रूपांतर और गतसमनी में उसके प्रार्थना करने के समय की दो महत्वपूर्ण पलों में जागते नहीं रह सके थे (लूका 9:30-33; मत्ती 26:36-45)। इस बार, जब वे अचानक नींद से जागे तो यीशु को **मूसा और एलिय्याह** के साथ बातें करते देख चकित रह गए। वचन यह संकेत नहीं देता है कि चेलों ने उन्हें पहचाना कैसे; हो सकता है कि उनकी बातचीत से उन्होंने पहचान लिया हो।

इस अवसर पर मूसा और एलिय्याह का यीशु को दिखाई देना उपयुक्त था। मूसा इस्राएल का महान व्यवस्था देने वाला (देखें यहोशू 1:17), परन्तु उस ने स्वयं लिखा था कि परमेश्वर ने कहा, ''सो मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस-जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा'' (व्यवस्थाविवरण 18:18)। परमेश्वर की आज्ञा से मूसा नबो पहाड़ पर गया और ''यहोवा के कहने के अनुसार वहीं मोआब देश में मर गया।'' फिर परमेश्वर ने ''उसे मोआब के देश में बेतपोर के सामने तराई में मिट्टी दी और आज के दिन तक कोई नहीं जानता कि उस की कब्र कहां है'' (व्यवस्थाविवरण 34:5, 6)।

एलिय्याह परमेश्वर के महानतम नबियों में से था। वह राजा अहाब के शासनकाल में जो इस्राएल के उत्तरी गोत्र पर राज करता था, बाल की पूजा का विरोध करने के लिए प्रसिद्ध है (1 राजाओं 16:29-19:18)। एलिय्याह उन दो जनों में से एक था, जो मरे नहीं।[5] इसके विपरीत उसे आग के रथ में एक बवंडर में स्वर्ग में उठा लिया गया था (2 राजाओं 2:11, 12)।

मूसा और एलिय्याह को सीने पर्वत पर परमेश्वर की ओर से प्रकाशन मिले थे (निर्गमन 24:12-18; 34:1-9; 1 राजाओं 19:8-12)। दोनों का ही नाम पुराने नियम के अंतिम शब्दों में पाया जाता है: ''मेरे दास मूसा की व्यवस्था को स्मरण रखो। ... मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा'' (मलाकी 4:4, 5)। स्पष्टतया यहूदी लोगों की उम्मीद थी कि मूसा और एलिय्याह इकट्ठे वापस आएंगे।[6] ये लोग पुराने नियम के इतिहास के दो ऐतिहासिक कालों के मुख्य प्रतिनिधि हैं। यीशु के साथ इनका दिखाई देना इस बात का संकेत था कि व्यवस्था और नबियों का अन्त निकट था (देखें 5:17, 18; लूका 24:44; रोमियों 10:4; इफिसियों 2:14-16)।

ये दोनों महापुरुष यीशु के साथ **बातें कर** रहे थे। मत्ती के विवरण में उनकी बातचीत में की गई बातों का उल्लेख नहीं है, पर लूका 9:31 कहता है कि वे ''उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होने वाला था।'' यीशु को उनके दिखाई देने का एक कारण यीशु को क्रूस

पर मृत्यु का सामना करने के समय सहायता और प्रोत्साहन देना था। अनुवादित शब्द ''मरने'' (नीचे टिप्पणी में ''विदा होने'' ''*exodos*'' - अनुवादक) का अनुवाद इब्रानियों 11:22 में ''निकल जाने'' (*exodus)* और 2 पतरस 1:15 ''मरना'' हुआ है (KJV)।

आयत 4. तीनों चेलों के जाग जाने के बाद, **पतरस ने यीशु से कहा ''हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है।''** अपनी आदत के अनुसार, पतरस समूह की ओर से बोलने लगा, इस बार उस ने याकूब और यूहन्ना की ओर से बात की। उसे समझ आ गया था कि यीशु के साथ होने और इस बड़ी घटना के गवाह बनने का उन्हें सौभाग्य मिला था। अन्य नौ प्रेरित नीचे तराई में थे, जिन्हें बुलाया नहीं गया था।

पतरस ने आगे कहा, **''यदि तेरी इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।''** मण्डप से पतरस का क्या अभिप्राय था? इस आयत में यूनानी शब्द (*skēnē*) का अनुवाद ''डेरे'' (RSV), ''आश्रय'' (NIV) और ''समाधियां'' (NLT) भी किया गया है।

''डेरे।'' तम्बुओं या डेरों के पर्व के दौरान यहूदी लोग जंगल में अपने चालीस वर्ष के सफर को याद करते हुए, यह वह समय था, जब वे तम्बुओं में रहा करते थे (लैव्यव्यवस्था 23:33-44)। इस पर्व में भाग लेने वाला हर परिवार इस सप्ताह के दौरान डेरा बनाता और उस में रहता। डेरों का पर्व तिशरी के महीने में मनाया जाता था। क्या पतरस पर्व को मनाने में तीन डेरे बनाने की पेशकश कर रहा था? यदि ऐसा है तो इस कार्य से संकेत मिलेगा कि रूपांतर फसह और प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के छह महीने पहले यहूदियों के महीने तिशरी (अक्तूबर) में हो गया था। परन्तु अध्याय में बाद में कर एकत्रित करने की बात वर्ष के इस समय के विरुद्ध तर्क देती है (17:24 पर टिप्पणियां देखें)।

''आश्रय।'' मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ थे (लूका 9:33), इस कारण रात वहां बिताने के लिए शायद पतरस का सुझाव पहाड़ पर शाखाओं और उपलब्ध पत्तों से अस्थाई आश्रय बनाना था। यदि इस प्रस्ताव का अर्थ यह था, तो उस की यह पेशकश आतिथ्य सत्कार वाली थी, उस ने चाहा होगा कि वे पहाड़ पर और देर तक रहें, ताकि वे उनकी शिक्षा से लाभ ले सकें।

''समाधियां।'' तम्बू जिसे मिलाप का तम्बू भी कहा जाता था, वह स्थान था जहां इस्राएली जंगल में परमेश्वर की आराधना किया करते थे (निर्गमन 25:1-27:21)। इसे परमेश्वर के आदर और महिमा के लिए बनाया गया था। शायद इसी तरीके से पतरस यीशु, मूसा और एलिय्याह के सम्मान में तीन समाधियां बनाना चाहता था। तीनों जन महिमा पाए होने की किसी न किसी स्थिति में थे (लूका 9:32), इस कारण पतरस ने तीनों को एक समान ही देखा और वह कह रहा था कि तीनों का एक जैसा आदर किया जाना चाहिए।

पतरस के मन में यह बात चाहे जैसे भी आई हो, पर उस की विनती में एक बात गलत थी। लूका ने लिखा है कि ''वह जानता न था, कि क्या कह रहा है'' (लूका 9:33)। मरकुस ने जोड़ा है कि ''वह न जानता था कि क्या उत्तर दे,'' क्योंकि ''वे बहुत डर गए थे'' (मरकुस 9:6)। पतरस उस समय भावनाओं में इतना बह गया था कि उस ने बिना सोचे समझे बोल दिया। सच्ची भावनाएं अच्छी होती हैं पर अपनी भावनाओं को अपने तर्क करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

आयत 5. वह बोल ही रहा था वाक्यांश सुझाव देता है कि पतरस को बीच में टोक दिया गया था। जब परमेश्वर ने बात की तो यह एक भयभीत करने वाला दृश्य था: **एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया**। बाइबल में चाहे यह शब्द इस्तेमाल नहीं हुआ पर बादल की घटना जो आम तौर पर चमकदार रोशनी और कई बार धुएं के साथ होती थी,[7] को बाद के यहूदी विद्वानों के द्वारा ''शिकाइना'' कहा गया है। बादल की यह घटना परमेश्वर की उपस्थिति को भी दर्शा सकती है। एक अर्थ में बादल को पतरस द्वारा सुझाई गई शाखाओं और पत्तों के आश्रय से बढ़कर कहीं अधिक बड़ी और अधिक महिमामय छाया के रूप में देखा जा सकता है।[8] मसीही युग में, परमेश्वर ने यीशु के द्वारा अर्थात अपने चुने हुए विशेष प्रवक्ता के द्वारा मनुष्य से बात करनी थी।[9]

परमेश्वर का **शब्द बादल** में से कह रहा था, ''**यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो**।'' बाद में पतरस ने लिखा कि इसी पहाड़ पर यीशु ने ''परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई।'' प्रेरित ने बादल में परमेश्वर के प्रकाशन को ''प्रतापमय महिमा'' के रूप में वर्णित किया (2 पतरस 1:17)। पिता की घोषणा से यह प्रकट किया गया कि मूसा, एलिय्याह और यीशु समान नहीं हैं। परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह, परमेश्वर है। परन्तु यह घोषणा यीशु के बपतिस्मे के समय कही गई परमेश्वर की बात से भी बढ़कर थी (3:17 पर टिप्पणियां देखें)। उस ने जोड़ा, ''**इस की सुनो!**'' यह ताड़ना विशेषकर पतरस के लिए उपयुक्त थी, जिसने अपने दुख भोगने की भविष्यवाणी करने पर पहले यीशु को डांटने की कोशिश की थी (16:21-23)। यीशु ही वह अधिकारात्मक भविष्यवक्ता है, जिसकी बातों पर ध्यान लगाना आवश्यक है (व्यवस्थाविवरण 18:15, 19; प्रेरितों 3:22, 23; 7:37)। आज केवल वही परमेश्वर का प्रवक्ता है (इब्रानियों 1:1, 2)। समय के अन्त में हर व्यक्ति को अपना अनन्त निर्णय पाने के लिए ''मसीह के न्याय आसन के सामने'' पेश होना ही पड़ेगा (2 कुरिन्थियों 5:10)।

आयत 6. परमेश्वर की भयदायक उपस्थिति से पतरस, याकूब और यूहन्ना की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया आई, **चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए**। किसी के सामने गिरना, भूमि पर अपने चेहरे को रखना, बड़ी दीनता और आदर का प्रतीक था। जब लोग परमेश्वर या उसके प्रतिनिधि के सामने आते तो आम तौर पर वे भूमि पर मुंह के बल गिर जाते थे (उत्पत्ति 17:3; लैव्यव्यवस्था 9:24; यहोशू 5:14; न्यायियों 13:20; 1 राजाओं 18:39; यहेजकेल 1:28; 3:23; 43:3; 44:4)। तीनों चेलों का भक्ति से झुक जाना बड़े भय के साथ हुआ। परमेश्वर की महिमा को चाहे संयोग से ही, देख लेने पर उन्हें वास्तव में मृत्यु की अपेक्षा हो सकती है (देखें न्यायियों 6:22, 23; 13:20-22)।

आयत 7. यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, ''उठो, डरो मत।'' उस ने पहले तो चेलों को स्पर्श से शांति दी (देखें 8:3, 15; 9:20, 25, 29; 14:36; 20:34) और फिर प्रोत्साहन की बातों से (देखें 9:2, 22; 14:27; 28:10)। प्रकाशितवाक्य 1:17 आयतों 6 और 7 के समानांतर का काम करता है। यूहन्ना ने जब मसीह का एक दर्शन देखा तो वह ''मुर्दे की तरह उसके कदमों में गिर गया।'' जवाब में यीशु ने यूहन्ना पर अपना दाहिना हाथ रखा और उसे न डरने को कहा।

आयत 8. यीशु द्वारा उन्हें पुन: आश्वस्त करने के बाद चेले जमीन पर से उठे और **यीशु को छोड़ किसी को न देखा**। जैसा कि NASB के अनुवाद में पता चलता है, यूनानी धर्मशास्त्र

में इस तथ्य पर ज़ोर देने के लिए कि यीशु अकेला था शब्दों का ढेर लगा जाता है। परमेश्वर की ईश्वरीय उपस्थिति का प्रतीक बादल उठा दिया गया था। मूसा और एलिय्याह गायब हो गए थे। कोई शक नहीं कि उठकर केवल यीशु को देखने से चेलों को बहुत राहत मिली।

एलिय्याह के विषय में चेलों का प्रश्न (17:9-13)

[9]जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी, ''जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।'' [10]इस पर उस के चेलों ने उस से पूछा, ''फिर शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?'' [11]उस ने उत्तर दिया, ''एलिय्याह अवश्य आएगा, सब कुछ सुधारेगा। [12]परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह आ चुका है, और लोगों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उस के साथ किया। इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दु:ख उठाएगा।'' [13]तब चेलों ने समझा कि उस ने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है।

आयत 9. स्पष्टतया **यीशु** और तीनों प्रेरितों ने रात पहाड़ पर बिताई, क्योंकि लूका 9:37 कहता है, ''दूसरे दिन'' ''वे पहाड़ से उतरे।'' उनके उतरते हुए, उस ने **उन्हें यह आज्ञा दी, ''जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।''** अपनी आदत के अनुसार प्रभु ने आश्चर्यकर्म की इस घटना और मसीह के रूप में अपनी पहचान के बारे में उन्हें खामोश रहने की आज्ञा दी (देखें 8:4; 9:30; 12:16; 16:20)। रूपांतर की जानकारी फैलने से अधिकतर यहूदियों को लाभ नहीं होना था, क्योंकि वे एक सैनिक मसीहा की उम्मीद कर रहे थे, जिसने एक सांसारिक राज्य को उखाड़ फैंकेगा। बेशक उन्होंने इस घटना की व्याख्या गलत कर देनी थी। परन्तु मसीह के जी उठने के बाद, रूपांतर की गवाही में कई सच्चाइयां लिपटी होनी थीं: (1) यीशु की ईश्वरीयता, (2) क्रूस पर मरने की उस की तैयारी, (3) स्वर्ग में उसके आत्मिक शासन का सत्य और (4) उसके वापस आने की प्रतिज्ञा की निश्चितता (2 पतरस 1:16-18)।

''देखा'' के लिए यूनानी शब्द (*horama*) रूपांतर की वास्तविकता को कम नहीं करता। यह शब्द नये नियम में चाहे अधिकतर ''दर्शन'' के लिए है (प्रेरितों 9:10; 10:3; 11:5; 12:9; 16:9; 18:9), पर इसका संकेत ''जो देखा है'' ही हो सकता है। इस शब्द का इस्तेमाल प्रेरितों 7:31 में जलती हुई झाड़ी के लिए किया गया है, जो कहता है कि मूसा ने ''उस दर्शन को देखकर अचम्भा किया'' (देखें निर्गमन 3:3)। आयत 9 के लिए NIV में कहा गया है, ''जो कुछ तुमने देखा है वह किसी और को न बताना।''

एक बार फिर से यीशु ने अपनी आने वाली मृत्यु और पुनरुत्थान की बात की (देखें 16:21)। परन्तु उसके शब्द अधिक स्पष्ट ढंग से उसके पुनरुत्थान की ओर ध्यान दिलाते हैं। वह अपने दुख सहने और मृत्यु के बजाय अपने चेलों का ध्यान कब्र पर अपनी विजय की ओर मोड़ रहा था।

आयत 10. चेलों को अभी भी मूसा और एलिय्याह के दिखाई देने का अर्थ समझ नहीं

आया था, जिस कारण उन्होंने **उस से पूछा, ''फिर शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?''** उनका प्रश्न मलाकी 4:5 की भविष्यवाणी से सम्बन्धित था: ''देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा।'' इसी वचन के आधार पर शास्त्री यह सिखाते थे कि एलिय्याह शरीर में वापस आएगा।[10] यदि ''पहले'' से चेलों के कहने का अर्थ न्याय के दिन से पहले था, तो वे इस बात पर हैरान हुए हो सकते हैं कि रूपांतर उस भविष्यवाणी का पूरा होना था या नहीं। एक और सम्भावना है कि उन्हें यही बताया गया था कि एलिय्याह का आना मसीहा से ''पहले'' होना था।[11] इस बात में वे उलझन में थे कि पहाड़ पर एलिय्याह के आगमन से पहले यीशु का आना क्यों हुआ था।

आयत 11. यीशु ने यह कहते हुए उत्तर दिया, **''एलिय्याह अवश्य आएगा और सब कुछ सुधारेगा।''** उसके आने से यह पता चल गया कि वह सैद्धांतिक रूप में शास्त्रियों की बात से सहमत था। यह मलाकी नबी की बात की ही पुष्टि थी, जिसने भविष्यवाणी की थी कि एलिय्याह आकर ''माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा'' (मलाकी 4:6)। ''सब कुछ'' सुधारने की बात मसीही युग को लाने की नहीं हो सकती, क्योंकि यह व्याख्या एलिय्याह को वह करते हुए दिखाई दी, जो केवल मसीहा ही कर सकता था। इसके विपरीत ''सब कुछ सुधारेगा'' मसीहा के लिए तैयारी के उसके काम को कहा गया है, जो मन फिराव और आत्मिक जागृति का कारण बनना था।[12]

आयत 12. फिर यीशु ने इस मुद्दे को स्पष्ट कर दिया: **''परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलिय्याह आ चुका है, और लोगों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उस के साथ किया।''** प्रभु ने सामान्य नियम की विशेष प्रासंगिकता में शास्त्रियों के साथ असहमति जताई। वे पुराने नियम के नबी के फिर से प्रगट होने की उम्मीद कर रहे थे (देखें यूहन्ना 1:19, 21), जबकि परमेश्वर ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को ''एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में होकर [मसीह] के आगे'' आगे भेजा था (लूका 1:17)। ''एलिय्याह'' (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला) पहले ही आ चुका था, परन्तु यहूदी अगुओं ने मन फिराने की उस की पुकार को नकार दिया था (3:7-10; 11:16-18; 21:25)। यूहन्ना चाहे धर्मी पुरुष था, पर हेरोदेस ने उसे गिरफ्तार करके मरवा डाला था (14:3-12)। यीशु ने कहा कि उस ने वैसे ही **दुख** उठाना था।

आयत 13. यीशु की व्याख्या के बाद **चेलों ने समझा कि उस ने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है।** पिछले एक अवसर पर यूहन्ना के स्वभाव पर चर्चा करते हुए प्रभु ने कहा था, ''चाहो तो मानो कि एलिय्याह जो आने वाला था,'' वह यही है (11:14)। पहाड़ से उतरते हुए पतरस, याकूब और यूहन्ना को ये सब बातें याद आ रही होंगी।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

परमेश्वर के लिए हमारी सेवा (अध्याय 17)

1. *कई बार परमेश्वर के लिए हमारी सेवा में स्वर्गीय दायरा होता है* (17:1-13)। पहाड़ पर यीशु का महिमा पाना एक स्वर्गीय घटना थी। बेशक हमें ऐसे दृश्यों का अनुभव तो नहीं मिलेगा पर परमेश्वर के वचन पर मनन करने से हमारे मनों में स्वर्गीय संसार के विचार आने

चाहिए। हमारे मन स्वर्ग में अनन्त जीवन के विचारों से भर जाने चाहिए (2 कुरिन्थियों 4:16; 5:1-7; 2 पतरस 3:13)।

2. *परमेश्वर को हमारी सेवा में शारीरिक अर्थात सांसारिक दायरा आता है* (17:14-23)। तीनों प्रेरित पहाड़ पर नहीं रह सकते थे। उन्हें पहाड़ के परमानंद को छोड़कर पृथ्वी के कठिन परिश्रम में वापस जाना आवयश्क था। हमें भी इसी प्रकार से अपने संसार की प्रतिदिन की आवश्यकताओं की ओर ध्यान देना चाहिए। किसी चर्च के भवन के द्वार पर इस प्रकार लिखा है, ''आराधना के लिए आओ। सेवा के लिए जाओ।''

3. *परमेश्वर को हमारी सेवा में, क़ानूनी, राजनैतिक दायरा शामिल है* (17:24-27)। कर देने को शामिल करती यीशु की शिक्षा उस की अन्य शिक्षाओं और उसके नमूने से मेल खाती थी (22:21)। सरकारी अधिकारियों के आज्ञापालन के लिए पौलुस ने भी यही नियम बताया (रोमियों 13:1-7)। किसी भी राजनैतिक प्रबन्ध के अधीन रहने के बावजूद मसीही लोगों का दायित्व अच्छे नागरिक बनना है। पौलुस ने अपनी नागरिकता को सम्भालकर रखा और उन अधिकारों के लिए अपील की, जो कानूनी तौर पर उसे मिलने आवश्यक थे (प्रेरितों 25:11)।

यीशु का रूपांतर होना (17:1-8)

यीशु का रूपांतर हमें कई विषयों पर कम से कम पांच तथ्य बताता है।

1. *पुरानी वाचा शीघ्र ही मिट जाने वाली थी और उस की जगह एक नई व्यवस्था ने लेनी थी।* व्यवस्था ''पुरानी और जीर्ण हो'' रही थी (इब्रानियों 8:13)। शीघ्र ही इसकी जगह एक नई वाचा ने ले लेनी थी, जिसमें हर जगह के सब लोग होने थे (इब्रानियों 8:7-12)।

2. *मृत्यु होने पर हमारा अस्तित्व मिट नहीं जाता है।* पहाड़ पर मूसा और एलिय्याह की उपस्थिति से यही दिखाया गया है। मृत्यु शारीरिक स्थिति में से आत्मिक स्थिति में जाना है (सभोपदेशक 12:5)। शारीरिक मृत्यु शरीर में से आत्मा का अलग होना है (सभोपदेशक 12:7; याकूब 2:26)। आत्मिक मृत्यु आत्मा का परमेश्वर से अलग होना है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

3. *मरने पर हमारी पहचान खो नहीं जाती।* पतरस, याकूब और यूहन्ना ने मूसा और एलिय्याह को कैसे पहचाना, इस बात का तो पता नहीं है; परन्तु इस मुलाकात से हमें यह समझ आता है कि मूसा अभी भी मूसा ही था और एलिय्याह अभी भी एलिय्याह ही था। भिखारी लाज़र अभी भी अब्राहम की गोद में लाज़र ही था और धनवान मनुष्य अभी भी पीड़ा में पड़ा वही व्यक्ति था (लूका 16:19-31)। पौलुस को स्वर्ग में उन लोगों को जानने की उम्मीद थी जिन्हें वह पृथ्वी पर जानता था (2 कुरिन्थियों 4:14; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)। थिस्सलुनीके के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए उस ने भविष्य में पहचान की अवधारणा का इस्तेमाल किया (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)।

4. *मसीह हमारी आराधना का विषय है।* मूसा और एलिय्याह चाहे जितने महान थे, परन्तु वे मसीह के बराबर नहीं थे। वे मनुष्य ही थे, जबकि वह ईश्वरीय है। उनकी आराधना नहीं की जानी चाहिए परन्तु यीशु की, की जानी चाहिए।

5. *मसीह आज परमेश्वर का प्रवक्ता है।* मूसा प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएलियों के प्रवेश से पहले उनके लिए परमेश्वर का प्रवक्ता था (निर्गमन 3; 4); और एलिय्याह जिसे मौखिक

नबियों में सबसे बड़ा माना जाता था, यहूदा और इस्राएल के लिए परमेश्वर का प्रवक्ता था। रूपांतर पर्वत पर परमेश्वर की घोषणा इस बात को साबित करती है कि जिस युग में हम रहते हैं उस में परमेश्वर का प्रवक्ता केवल यीशु है (17:5; इब्रानियों 1:1, 2)। बाद के किसी भी नबी को परमेश्वर की ओर से बोलने का अधिकार नहीं है, और न ही बाद का कोई प्रकाशन आज मनुष्य को दिया जा रहा है (यहूदा 3)।

विदाई के रूप में मृत्यु (17:3)

रूपांतर होने पर यीशु ने मूसा और एलिय्याह के साथ बात की। लूका 9:31 कहता है कि उनकी बातचीत का विषय उसके ''मरने'' (*exodos*) अर्थात ''कूच'' का था। मृत्यु शारीरिक स्थिति में से आत्मिक स्थिति में जाना है (सभोपदेशक 12:5, 7; फिलिप्पियों 1:19-21)। मसीही लोगों के लिए मृत्यु गुमनामी में जाना नहीं बल्कि सड़ रहे सांसारिक शरीर की दासता से छूटकर स्वर्गीय घर के आनन्द में जाना है (यूहन्ना 14:1-6; 2 कुरिन्थियों 5:1-4)। यीशु ने हमारे लिए वह किया है जो मूसा और एलिय्याह ने उसके लिए किया, बल्कि उससे भी बढ़कर। मृत्यु पर विजय पाकर उस ने हमें आश्वासन दिया है कि व्यक्ति मरकर फिर से जी सकता है, यानी कब्र हमें कब्जे में नहीं रख सकती (1 कुरिन्थियों 15:50-58)। वह हमारे अन्तिम शत्रु के ऊपर विजयी हुआ था इस कारण हम उस विजय में भागीदार हो सकते हैं (1 कुरिन्थियों 15:25, 26)।

एलिय्याह, जो आने वाला था (17:9-13)

जब चेलों ने यीशु से पूछा कि शास्त्री क्यों कहते हैं कि ''एलिय्याह का पहले आना अवश्य है'' (17:10) तो उनके प्रश्न का आधार मात्र रब्बियों की परम्परा से कहीं बढ़कर था। वे मलाकी की भविष्यवाणी के विषय में पूछ रहे थे (मलाकी 4:5, 6)।

यीशु ने उन्हें बताया कि ''एलिय्याह आ चुका है, और लोगों ने उसे नहीं पहचाना'' (17:12)। ''तब चेलों ने समझा कि उस ने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है'' (17:13)। यीशु ने उन्हें पहले बताया था कि यूहन्ना नहीं वह आने वाला एलिय्याह था (11:14)। एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना की जगह जकर्याह को बताया था कि उसके पुत्र ने ''एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में होकर'' आना था (लूका 1:17)। तो फिर यूहन्ना ने क्यों कहा कि वह एलिय्याह नहीं है (यूहन्ना 1:21)? बेशक यूहन्ना के यह कहने का अर्थ कि वह एलिय्याह नहीं है वही था जो यीशु का अर्थ था। यूहन्ना उसी आत्मा में प्रचार करता था जिसमें एलिय्याह भविष्यवाणी करता था, परन्तु वह देहधारी हुआ एलिय्याह यानी शारीरिक रूप में एलिय्याह नहीं था।

टिप्पणियां

[1]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 262. [2]देखें जोसेफस *वार्स* 2.20.6; 4.1.8. [3]रूपांतर के लिए अंग्रेजी

शब्द ''transfigured'' लातीनी भाषा के अनुवाद (*transfiguratus est*) से प्रभावित हुआ है। (जैक पी. लुईस, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* अंक 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री [आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976], 44.) [4]*जौंडरवन इलस्ट्रेटिड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 106 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [5]दूसरा व्यक्ति हनोक था (उत्पत्ति 5:24)। [6]*ड्युट्रोनोमी रब्बाह* 3.17. यहूदियों की उम्मीद के लिए कि मूसा ने दोबारा आना था, प्रमाण बहुत कमजोर है, जबकि कई हवाले एलिय्याह के आने की ओर संकेत करते हैं (11:14 पर टिप्पणियां देखें; 17:10–12)। एलिय्याह की वापसी के सम्बन्ध में विस्तृत दस्तावेज के लिए, देखें क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 439–40, एन. 122. [7]देखें निर्गमन 13:21, 22; 16:10; 24:15–18; 40:34–38; गिनती 9:17; 11:25; व्यवस्थाविवरण 1:33; 5:22; 1 राजाओं 8:10–13. [8]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंट्री आन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 344. [9]देखें डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लीकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 493. [10]प्रवक्ता ग्रंथ 48:10, 11; मिशनाह *एडुयोथ* 8.7; *सोटह* 9.15; *बाबा मेसिया* 3.4, 5; टालमुड *एरुबिन* 43बी। देखें जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेब्रेका: मैथ्यू–1 कोरिन्थियंस,* अंक 2, *मैथ्यू–मार्क* (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 244–46.

[11]देखें जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 8; 49. [12]हैग्नर, 499.